ज्ञानविविधा
कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025
Page No.-387-391
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

1. रेशमी कुमारी
शोधार्थी (हिन्दी), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

2. प्रो. सतीश कुमार राय
शोध-निर्देशक, वि.वि. हिन्दी विभाग, बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

Corresponding Author :

रेशमी कुमारी
शोधार्थी (हिन्दी), बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

सृंजय की कहानियाँ : एक अनुशीलन

सृंजय (25 जनवरी, 1961) समकालीन हिन्दी के महत्त्वपूर्ण कहानी लेखक हैं। भोजपुर के तेतरिया गाँव में जन्में सृंजय ने 1984 में लेखन प्रारम्भ किया। पत्र - पत्रिकाओं में उनकी गद्य रचनाएँ छपती रही। उन्हें प्रसिद्धि मिली 'कामरेड का कोट' शीर्षक कहानी से। यह कहानी फरवरी 1989 में हंस पत्रिका में प्रकाशित हुई। राधाकृष्ण पेपरबैक्स द्वारा 2001 में उनका पहला कहानी संग्रह 'कामरेड का कोट' शीर्षक से ही प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में पांच कहानियां संकलित है, जिनके शीर्षक हैं- 'बैल बधिया', 'लक्ष्मी के पाँव', 'भगदत्त का हाथी', 'तख्त-ओ-ताब', और 'कॉमरेड का कोट'।

प्रकाशन की दृष्टि से 'बैल बधिया' उनकी पहली कहानी है। यह कहानी जन - संस्कृति पत्रिका के अप्रैल-जून 1987 के अंक में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी शोषण के खिलाफ आवाज बुलन्द करती है। मुरली बहू का चरित्र इसमें पूरी सबलता के साथ चित्रित हुआ है। मुरली गाँव के चौधरी के यहाँ गुलामी करता है। चौधरी का इंजीनियर पुत्र मुरली के पुत्र को अपनी सेवा के लिए शहर ले जाना चाहता है। मुरली बैल को नियंत्रित करने के क्रम में उसके सिंग से घायल होता है और उसकी अतरी बाहर निकल आती है कहानी का अंत अत्यंत मार्मिक है। मुरली बहू के नकार में पूंजीवादी व्यवस्था पर चोट है। वह मुखर हो उठती है - "जानत हुई मालिक" हमेशा सिर झुका कर रहेने वाली मुरली में न जाने कहाँ की वाचालता आ गई थी। उसने बेभाव जवाब दिया "अपने बछड़े का बधिया करवाइएगा इहे ना इरादा है, मालिक, ससुर के बाद हमरा मरद आपके हियाँ बैल बना, अब हमारे बेटे पर तकटकी लगाए हैं । ई आशा छोड़ दे, मालिक।" उसे लगा कि पति की आत्मा आज सही अर्थों में मुक्त हुई है।"[1]
'लक्ष्मी के पाँव' शीर्षक कहानी 'कहानियाँ' मासिक के अक्टूबर 1987 अंक में प्रकाशित हुई। इस कहानी के जीवराज बाबू एक जीवन्त चरित्र के रूप में पाठकों के बीच उपस्थित हैं। जीवराज निम्न मध्यवर्ग की

मानसिकता का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे एक कार्यालय में कर्मचारी हैं। आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए वे लौटरी का टिकट कटाते हैं, उन्हें लगता है कि भाग्य उनका साथ देगा और वे रातो-रात अमीर बन जायेंगे किन्तु उन्हें इसमें सफलता नहीं मिलती। उनकी गहरी निराशा से इस कहानी का अंत होता है। उनके मनोभाव का कितना सजीव चित्रण कहानी के इस अंतिम अंश में हुआ है-"रास्ते में निराला लॉटरी एजेंसी पड़ती थी। जीवराज ने मनीबैग से टिकट निकाला और मन ही मन लक्ष्मी को प्रणाम किया। दीवाली के दिन ही ड्रा हो चुका था। वे आने वाली खुशी के लिए स्वयं को तैयार करने लगे। एजेंट ने नम्बर मिलाते हुए अफसोस प्रकट किया “बैडलक --- बाबू। एक अंक के लिए आपका नम्बर कट गया है।"

जीवराज बाजू ने झपाक से टिकट छीन लिया। वे प्रतिक्रिया शून्य हो गए। उनके सामने दो गोरे-गोरे कोमल पाँव नजर आने लगे। महावर रचे उन पांवों में रत्न मढ़े पायल और बिछवे थे। वे पाँव उनकी नजर से ओझल होते हुए दूसरी तरफ मुड़ गए। अब केवल एड़ियाँ दिख रही थी। बिबाई फटी एड़ियाँ। डबडबाई आँखों से उन्होंने अपने पैरों पर दृष्टि डाली। निरंतर चप्पल पहनने से जीवराम की एड़ियों में दरारें पड़ गई थी।“[2]

‘भगदत्त का हाथी’ शीर्षक कहानी सारिका के जनवरी 1998 अंक में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी लोक - जीवन के यथार्थ को हमारे सामने रखती है। वैवाहिक रीति-रिवाज, हास-परिहास सबका अत्यन्त सजीव वर्णन इस कहानी में मिलता है। भागमणि के वैवाहिक प्रसंग को वैवाहिक कार्यक्रमों को काफी कुशलता से इस कहानी में चित्रित किया गया है। विदाई के पहले का यह दृश्य- "भागमणि माँ की गोद में निर्भेद सो गई है। झकझोर कर जगाया जाता है उसे, माया तज द्वार बबुनी। विदा होना है...पराया भया बावुल का द्वार...”

कहाँ विदा होना है? क्यों विदा होना है? क्यों परायी हो गई वह? माँ की गोद से चिपटकर विसुरने लगी है भागमणि। क्या समझे वह नादान...

सूतल रहलों मइया तोरी गोदवा,
निंदिया उचट गई मोर,
केकरे दुआरे मइया बाजन बाजे,
पूछे नैना भरि - भरि लोर...

डरी हुई, आँसुओं से भरी हुई, आँखें पूछती हो जैसे...माँ! मैं तो तुम्हारी गोद में सो रही थी, सहसा नींद उचाट गई, यह किसके दरवाजे पर बाजा बजा, किसका विवाह रचा गया, मुझे तो कुछ पता ही न चला।“[3]

भागमणि नौ साल की कन्या है और विपरीत परिस्थिति में असमय ही उसकी शादी कर दी जाती है। उसकी बड़ी बहन रासमणि का विवाह इकबाल सिंह के बेटे से तय होता है। विवाह के दिन बिलौकी मांगने के क्रम में वह अचेत हो जाती है और अंततः उसकी मृत्यु हो जाती है। बिना विवाह बारात की वापसी से जगहंसाई होगी यह सोचकर अबोध बालिका को विवाह के फंदे में बाँध दिया जाता है। इस अपयश से बचने के लिए एक बालिका असमय ही परिणय बंधन में बाँध दी जाती है। महाभारत के प्रसंग के अनुसार राजा भगदत अर्जुन के तीर से मरे हुए हाथी को जीवित हाथी खड़ा कर देते हैं। इसी आधार पर इस कहानी का शीर्षक रखा गया है। यह कहानी पुरुष वर्चस्ववादी मानसिकता के साथ नारी दमन और धार्मिक आडम्बर पर चोट करती है।

‘कामरेड का कोट’ हिन्दी की अत्यन्त महत्वपूर्ण कहानियों में एक है। इस कहानी की समीक्षा करते हुए डॉ. हेमराज कौशिक ने लिखा है- "कामरेड का कोट’ सृंजय की लम्बी कहानी है। इस कहानी में भारतीय संदर्भ में मार्क्सवादी पार्टी की गतिविधियों और अन्तर्विरोधों पर चिंतन मनन किया है। कमलकांत जैसे पार्टी के प्रति समर्पित, जन आन्दोलन में सक्रिय और लोकप्रिय व्यक्तियों को पार्टी के ही उच्च पदाधिकारी न केवल उपेक्षित करते हैं अपितु अपमानित करने के लिए मिथ्या दोषारोपण भी करते हैं। इस कहानी में कमलकांत प्रमुख चरित्र है। कहानी के प्रारम्भ

में उसकी निर्धनता का चरम रूप दिखाई देता है। पार्टी की मीटिंग में उपस्थित होने के लिए माघ की भीषण शीत में उसे ज्वरग्रस्त बेटे के ऊपर से अपनी चदरिया ले जानी पड़ती है।"[4]

वस्तुतः यह कहानी वामपंथ के अंतर्विरोधों को रेखांकित करती है। जगतनारायण सिंह मजदूरों का शोषण करते हैं। सेठ के लठैत मजदूरों की हत्या करते हैं। कामरेड कमलकान्त इन घटनाओं पर द्वन्द्वग्रस्त होते हैं, यह कहानी यह भी स्पष्ट करती है कि वामपंथी विचारधारा भटकाव का शिकार हो रही है।

उनका दूसरा कहानी-संग्रह 'नंगा' 2001 में राधाकृष्ण प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ। इसमें आठ कहानियां संकलित हैं-'मूंछ', 'राजमार्ग पर', 'खल्ली छुलाई', 'नंगा', 'डमर', 'हममजहब', 'बैल', और 'बुद्धिओजी'। इस संग्रह की सर्वाधिक प्रमुख कहानी 'नंगा' है। यह आज के बाजारीकरण को पुरे यथार्थ के साथ रेखांकित करने वाली कहानी है। आज के मनुष्य के सारे कार्यकलाप, सारे संबंधों के पीछे व्यावसायिक मानसिकता है। इस कहानी का का नायक अपने मित्र 'मानस' के शारीरिक सौष्ठव को देखते हुए उसे मॉलिंग की और उन्मुख करता है। 'मानस' आलीशान होटल में जाता है और वहाँ कमरे में रखे दैनिक कुटियों की सामग्री को समेटने लगता है। मॉडल के रूप में बाजार में रहने के कारण वह स्वयं बाजारु मानसिकता से ग्रस्त हो जाता है। उसके कृत्य को देखकर उसका मित्र उसे टोकता है और उसकी प्रतिक्रिया ऐसी होती है- "मैं समझ गया, वह बार - बार टायलेट क्यों जा रहा था, ये सारे सामान उसने टायलेट से और रुम सर्विस कैरेज से उठा लिए थे। "यह तुमने क्या किया मानस?"

मैं उबल पड़ा, "जिस सोसायटी से तुम आए हो, उसका तौर-तरीका जानते हो? उसकी प्रतिष्ठा जानते हो? यहाँ इस तरह किया जाता है, तुम्हें जो कुछ दिखा उठाईगीरों की तरह उसे थैले में भरते गए। क्या सोचेंगे होटलवाले,... मेन्युफैक्चरर" मैं माथा पकड़कर बैठ गया, "तुम्हें किस चीज की कमी थी, मुझसे माँग लेते। खरीद लेते। पकड़े जाने पर जानते हो कितनी फजीहत होती। चोलुच्चे..लफंगे...चोर।" जिनका लिया है, वे सब भी चोर हैं।" वह धीरे से बोला, हमारी ही जेब से लेते हैं वे।"

'तुम निरे लम्पट हो। अब समझा। सुबह तुम उस लड़की को कमरे में बुला रहे थे। तुम्हारी इतनी हिम्मत? नीच! कमीने। तुम मेरे साथ आए कैसे? जानते हो लोग मुझे कितनी इज्जत देते हैं। तुमने आज मुझे नंगा किया है। मेरी दोस्ती को गाली दी है।" न जाने क्या-क्या कहता गया। मेरी इच्छा हो रही थी कि मार- मारकर मानस का थोबड़ा खराब कर दूँ। उसे सारे सामान के साथ घसीटते हुए होटलवालों के सामने ले जाकर पटक दूँ। लोग इस पर थूकें। तमाचे और लातें मारें।"[5]

'हममजहब' कहानी सांप्रदायिकता के प्रश्न पर विचार करने वाली कहानी है। सांप्रदायिक दंगों के कारण जब कर्फ्यू लगा दिया जाता है उस समय छोटे व्यवसायी और मजदूर अपनी आजीविका से वंचित हो जाते हैं। इस कहानी का मान्नान फेरीवाला है जो प्रतिदिन हिन्दू बस्ती में फेरी लगाने जाता है किन्तु सांप्रदायिक तनाव के कारण वह घर में ही कैद हो जाता है। उसके सामने आजीविका का संकट उत्पन्न हो जाता है। उसका पड़ोसी और सम्पन्न चावल व्यापारी 'अब्बास' उसकी सहायता नहीं करता। वह अधिक लाभ लेकर अपना चावल बेचता है। कहानीकार ने दिखाया है कि संकट में एक-दूसरे का साथ नहीं देने वाले लोग भी सांप्रदायिकता का जहर फैलाने के लिए एकजूट हो जाते हैं। यह कहानी मानवीय संवेदना को झकझोरती है। दंगे के वातावरण का चित्रण -"धंधा ठप पड़ा था। पूरे शहर पर पर एक जिन्नाती साया मंडरा रहा था। कब क्या हो जाए कहना मुश्किल था। चारों ओर मारकाट और बाही - तबाही मची हुई थी। ऊपर से पुलिस की तलाशी और धर-पकड़। सिर्फ भूख की फिक्र रहती तो कोई बात न थी। मारे दहशत के और बुरा हाल था। कहीं भी निकलना - बैठना एकदम बन्द था। तनिक भी गफलत हुई कि आदमी पकड़ लिया गया। फिर तो किसी कुएँ -बावड़ी में उसकी लाश ही मिलती थी। खाने-पीने की चीजें एकदम लापता हो गई थी। मिलें भी कैसे जब दुकानें खुल ही न पा रही हों। कहीं कुछ मिलता भी था तो सोने के भाव। कुछ सस्ता था तो आदमी की जान। इन

सबसे मजहब का कितना फायदा हुआ, यह तो सात परदे में छिपा ऊपरवाला ही जाने, लेकिन सियासी गाइवबाजों को अपने मंसूबे में जरूर कामयाबी मिली। मान्नान को बड़ी शिद्दत से इस बात का अहसास हो रहा था कि आदमी के बिना आदमी का काम नहीं चल सकता। भले ही जुनून में आकर आदमी आदमी के ही खून का प्यासा बन बैठे।"[6]

कहानीकार ने इस कहानी के माध्यम से एक सामयिक समस्या पर विमर्श किया है। आज वैश्वीकरण के दौर में हम मनुष्य की जगह व्यापारी हो के रह गए हैं। ऐसा नहीं है कि सृंजय ने सिर्फ शहरी परिवेश या कस्बों तक ही अपने को सीमित रखा है। तथ्य की दृष्टि से उनकी कहानियों में वैविध्य है। उनकी कहानियों में परिवेश का यथार्थ चित्रण मिलता है। 'खल्ली छुलाई' कहानी ग्रामीण परिवेश को जीवंत कर देती है। सूदखोर महाजनों के शोषण चक्र के साथ ठेकेदार के अमानवीय बर्ताव को इस कहानी में पूरे यथार्थ के साथ रेखांकित किया गया है। 'खल्ली छुलाई' कहानी में शिक्षा जगत के यथार्थ को भी रेखांकित किया गया है। 'मूंछ' कहानी में अभिजात्य के दंभ के साथ मिथ्या प्रदर्शन को चित्रित किया गया है। गाँव के जमींदारों में मूंछ की लड़ाई का अत्यन्त सजीव चित्रण भी इस कहानी में मिलता है। यह कहानी हंस के अगस्त 1991 अंक में प्रकाशित हुई थी। साहूकार और ठाकुर साहब का यह वार्तालाप-

"तुम क्या चाहते हो की सारी जमीन तुम्हें देकर मैं दंड - कमंडल लेकर निकल जाऊं?

"मैं कारोबारी आदमी ठहरा, जमीन लेकर क्या करूंगा। मुझे नगद ही वापस कर दीजिए।"

"तो सुन लो, अब मैं तुम्हें एक बित्ता जमीन भी नहीं देने वाला।"

ठाकुर साहब आपा खो बैठे "अब बचो तुम, तुम्हारी मूंछ मैं खुद उखाड़ूंगा...नहीं मैं खुद क्यों,...

मैं अपने चाकरों से उखड़वाऊंगा...मत में भिगोकर मुंडवाऊँगा।"

साहूकार डर गया, लेकिन उसने चतुराई से काम लिया, "ठाकुर साहब। मूंछ उखड़वानी ही है तो अकेले में क्यों? पाँच - पंच के सामने इसीलिए न कि वहां सबसे कहोगे कि ठाकुर साहब ने मुझसे कर्ज लिया है। मुझे बेदिन करवाने के लिए..। "आप किसी की कसम धरा लें। साहूकार बोला "मैं ऐसी ओछी बात कभी नहीं करूंगा। मैं आपकी बहादुरी की तजवीज करना चाहता हूँ। सामने फैसला हो कि किसकी मूंछ रहेगी और किसकी नहीं?"[7]

'डमर' कहानी आज के अपराधीकरण का मनोविश्लेषण करने वाली कहानी है। अपहरण और लूट को व्यवसाय के रूप करने में विकसित करने वाली मानसिकता को व्यंजित करती है यह कहानी। अपहरण के कारोबार का यह यथार्थ चित्रण द्रष्टव्य है-"कल ही पाँचू आया था। कल नहीं, बल्कि परसों रात को। इस बार गजब किया उसने। इसी इलाके से चुने गए मंत्री जी की बेटी को उठा लाया था। वह एक पहाड़ी शहर के कॉलेज में पढ़ती थी। पाँचू ने उसके बारे में राई - रती का पता लगाया...क्लास, नम्बर, नाम, हॉस्टल के कमरे का नम्बर, उसकी आदतें, एक आदमी इंस्पेक्टर की वर्दी पहनकर गया। सफेद गाड़ी लेकर। एक टोकरी जरदा आम लेकर। लड़की को जरदा आम खूब भाते थे, लेकिन खाती कम थी और धाक जमाने के लिए बांटती अधिक थी (वह आदमी अंग्रेजी में बोला कि मंत्री जी अपने दल की एक सांगठनिक बैठक में आए हुए हैं। दिन-भर उसी में उलझे रहेंगे। शाम तक वापस भी हो जाना है। आपको वहीं बुलाया है। गेस्ट हाउस में लड़की को जरा-सा भी शक नहीं हुआ। दुनिया को हड़का कर रखनेवाले बाप की बेटी को शक भी कैसे होता। जबकि पुलिस का आदमी बुलाने आया हो, वह चल पड़ी... इसके बाद तो वह पाँचू के पास जंगल में थी। कोई सोच भी नहीं सकता था कि छटांक भर का वह पाँचू अपना इलाका छोड़कर इतनी दूर से यह काम करवाकर चला आएगा।"[8]

सृंजय की कहानियाँ भले ही संख्या की दृष्टि से कम हो किन्तु संवेदना और शिल्प की दृष्टि से वे विशिष्ट हैं। उनकी कहानियों में ताजगी है और पाठकों के साथ सीधा संवाद करने की ताकत भी। उनकी कहानियाँ किसी का अनुकरण नहीं बल्कि अपनी अलग पहचान रखने वाली कहानी है। उनके संबंध में डॉ. हिमराज कौशिक ने बिलकुल सच लिखा है-"सृंजय की इन कहानियों के कथ्य और अभिव्यक्ति शैली दोनों ही स्तरों पर अपना-अपना अक्षुण्ण

निजीपन है। अनुभूतियों से संस्पर्शित सूक्ष्म अंतर्दृष्टि और प्रतिगामी, जड़ सामाजिक परम्पराओं, विसंगतियों रूढ़ सामाजिक ढांचे में सामंतीय एवं पूँजीवादी मानसिकता से उत्पीड़ित जन की पीड़ा, पितृसत्तात्मक समाज में नारी के प्रति निर्ममता, लिंग भेद और जाति-विधान आदि विविध सामाजिक सरोकार इन कहानियों का भाषागत वैशिष्ट पाठकों को आकर्षित करता है। कहानियों में परिवेशगत यथार्थ और पात्रों की मनोभूमि के अनुरूप भाषा में आंचलिक शब्दों, मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग सरस बन पड़ा है। आंचलिक यथार्थ को उसकी पूरी सच्चाई और जीवंतता के साथ मूर्त करने के लिए अनेक स्थानों पर कुछ अपरिचित, अप्रचलित शब्दों और वाक्यों का प्रयोग किया गया है। उनसे पाठक अपरिचित भी है परन्तु कहानी के अंत में दिए गए अर्थ सहायक होते हुए भी पठन की गति को कहीं-कहीं अवरुद्ध अवश्य करते हैं। परन्तु वे कथ्य और पात्रों के साथ अभिन्न रूप में संपृक्त होकर कथ्य को समग्रता में संप्रेषित करने में सक्षम हैं। सृंजय की ये कहानियाँ प्रचलित विमर्षों से भिन्न धारा और संवेदना की कहानियाँ हैं।

संदर्भ ग्रंथ-सूची :

1. बैल बधिया, शीर्षक कहानी से 'कामरेड का कोट', राधाकृष्ण पेपरबैक्स, दूसरा संस्करण,पृष्ठ-16.
2. लक्ष्मी के पांव शीर्षक कहानी से, वही, पृष्ठ-32.
3. भगदत का हाथी शीर्षक कहानी से, वही, पृष्ठ-80.
4. हिन्दी की भूमण्डलोत्तर कथा भूमि, सम्पादक - विजय राय, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण – 2023, पृष्ठ-25.
5. नंगा, सृंजय, राधाकृष्ण पेपर बैक्स, पहला संस्करण : 2023, पृष्ठ-86-87.
6. हममजहब कहानी से, नंगा कहानी-संग्रह, सृंजय, राधाकृष्ण पेपरबैक्स, पहला संस्करण 2023, पृष्ठ-105.
7. मूंछ कहानी से, वही, पृष्ठ -23.
8. डमर कहानी से, वही, पृष्ठ-96.
9. हिन्दी की भूमण्डलोत्तर कथा भूमि, सम्पादक - विजय राय, पृष्ठ-36.

•